लैंगिक चुनौतियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

पूजा मिश्रा
शोध छात्रा समाजशास्त्र
एवं
डॉ. महेश शुक्ला
प्राध्यापक, समाजशास्त्र
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय,
रीवा (म.प्र.)

सारांश

प्राचीनकाल से समाज में नारी को देवी की भाँति श्रद्धा एवं सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। नारियों की पूजा की जाती थी उनको पुरूष के भाँति समानता के अवसर प्रदान करने के लिए विधियों का निर्माण किया गया था। लेकिन आज के आधुनिक समय में समाज में नारियों के प्रति दृष्टिकोण संकीर्ण मानसिकता की तरफ बढ़ता जा रहा है। वह महिलाओं में अपना वर्चस्व दिखाना चाहता है। समाज महिलाओं के साथ लिंग के आधार पर भेदभाव करता है जिससे महिलाओं का प्रतिनिधित्व जीवन एवं सामाजिक क्षेत्र में कम होता जा रहा है। घटता लिंगानुपात में संतुलन नहीं स्थापित किया गया तो वह दिन दूर नहीं कि हमें अपने बेटों के लिए बहुएँ नहीं मिल पायेगी समाज का ताना-बाना एवं संरचना बिगड़ने लगेगा। अनेकों प्रकार का शारीरिक एवं मानसिक अपराधों, हिंसा एवं अत्याचार बढ़ने लगेगा।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देष्य मध्यप्रदेश राज्य में लैंगिक आधार पर असमानता का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना एवं असमानता के कारणों का पता लगाना है।

समाज वैज्ञानिकी अक्टूबर-मार्च 2022-23
अंक-35-36, ISSN 0973-4201
भारतीय समाज विज्ञान परिषद्